Toppersnotes
Unleash the topper in you

REET

राजस्थान शिक्षक पात्रता परीक्षा

Board of Secondary Education, Rajasthan

Level – II (कला वर्ग)

भाग – 4

सामान्य अध्ययन – 1

SIERRA INNOVATIONS

विषय सूची

भारतीय इतिहास, संस्कृति एवं समाज

1. सिंधु घाटी सभ्यता 1

2. वैदिक सभ्यता 4

3. भारतीय समाज 17
   - विशेषताएँ, परिवार
   - ग्रामीण जीवन एवं शहरीकरण

4. महाजनपद मौर्य, गुप्त साम्राज्य एवं गुप्तोत्तर काल 23

5. राजपूत काल 51

6. सूफी मत एवं भक्ति आंदोलन 60

7. मुगलकाल एवं इसका प्रशासन, कला 69

8. भारतीय राज्यों के प्रति ब्रिटिश नीतियाँ 77

9. 1857 की क्रांति 95

10. आधुनिक भारत (1919–1947) 102
    - प्रभाव, धार्मिक–समाज सुधार आंदोलन
    - राष्ट्रीय आंदोलन इत्यादि ।

भारत का संविधान

1. संविधान सभा 132

2. प्रस्तावना 135

3. मौलिक अधिकार 138

4. राज्य के नीति निदेशक तत्व 152

5. मौलिक कर्तव्य 153

6. संघ की कार्यपालिका (राष्ट्रपति) 156

7. भारत का उपराष्ट्रपति 163

8. प्रधानमंत्री 166
9. मंत्रिमंडल 168
10. संसद 170
11. सर्वोच्च न्यायालय 186
12. CAG 190
13. राज्य की कार्यपालिका (राज्यपाल) 191
14. राज्य का विधानमण्डल 193
15. पंचायतीराज 194

राजस्थान का इतिहास एवं संस्कृति

1. सामान्य परिचय 198
2. प्राचीन सभ्यतायें 200
3. महाजनपद काल 204
4. 1857 की क्रांति 205
5. राजस्थान में आंदोलन 207
- किसान, जनजाति, स्वतंत्रता
- ग्रामीण जीवन एवं शहरीकरण

6. राजस्थान का एकीकरण 213
7. राजस्थान की कला एवं संस्कृति 217
- किले, मैले, त्यौहार
- लोक कलायें, हस्त कलायें
- साहित्य, पर्यटन इत्यादि

इतिहास

सिन्धु घाटी सभ्यता

- परिचय
- विस्तार
- कालक्रम
- निवासी
- नगर नियोजन
- महत्वपूर्ण नगर
- लिपि
- पतन
- अन्य महत्वूर्ण तथ्य

परिचय

सिंधु घाटी सभ्यता –

- 1922 में रखाल दास बर्नजी ने इस मोहनजोदड़ो की खोज की ।
- इस सभ्यता के स्थल सिंधु एवं उसकी सहायक नदियों के किनारे थे । अतः इस घाटी का नाम सिंधु घाटी सभ्यात पडा ।

सरस्वती नदी घाटी सभ्यता –

- आजादी के बाद खोजे गए सर्वाधिक स्थल इस नदी क्षेत्र में है । अतः इसका नाम सरस्वती नदी घाटी सभ्यता भी कहा जाने लगा है ।

कास्य युगीन सभ्यता –

- उत्खनन में कंस्य के बर्तन या उपकरण अधिक मिले ।

नगरीय सभ्यता –

- सिंधु घाटी सभ्यता एक विस्तृत एवं समृद्ध नगरीय सभ्यता है । यहां बडे – बडे नगरों का उदय हुआ था ।

विस्तार –

- अफगानिस्तान
- पाकिस्तान
- भारत

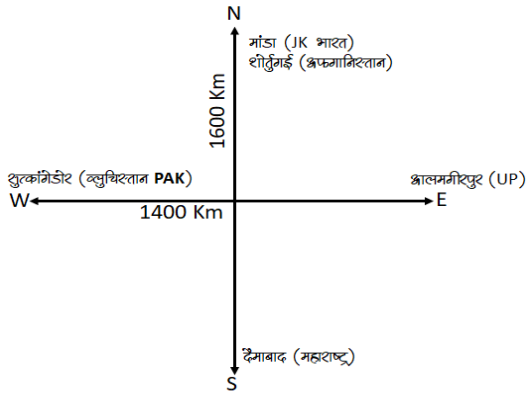

1300 किमी समुद्री सीमा

नगर नियोजन –

- नगर दो भागों में विभाजित – पश्चिमी भाग एवं पूर्वी भाग । पश्चिमी भाग दुर्ग था, पूर्वी भाग सामान्य नगर था ।
- पश्चिमी भाग में प्रशासनिक लोग रहते थे । तथा पूर्वी भाग में जनसामान्य लोग रहते थे ।
- सिंधु घाटी सभ्यता में पक्की ईंटों के मकान है ।
- सिन्धु घाटी के समकालीन सभ्यताओ मे इस विशेषता का अभाव ।
- नगर परकोटे युक्त होते थे ।
- घरों के दरवाजे मुख्य सडक की तरफ न खुलकर पीछे की तरफ खुलते थे । केवल लोथल में मुख्य सडक की तरफ घरों के दरवाजे खुलते थे ।
- कालीबंगा दोहरे परकोटे युक्त है । जबकि चन्हुदड़ो में कोई परकोटा नही ।
- धोलाबीरा तीन भागों में विभक्त है । पश्चिमी, पूर्वी एवं मध्यमा ।

- लोथल एवं सुरकोटडा का पश्चिमी एवं पूर्वी भाग दोनो ही एक ही परकोटे से घिरे हुए है ।
- नगर ग्रिड पद्धति पर आधारित थे अर्थात शतरंज के बोर्ड की तरह सभी नगरों को बसाया था । सभी मार्ग समकोण पर काटते थे ।
- सबसे चौडी सडक 10 मीटर (मोहनजोदडो) की मिलती है जो सम्भवतः राजमार्ग रहा होगा ।
- घरो मे उत्कृष्ट नाली व्यवस्था (जल निकासी हेतु)
- बडी नालियो को ढक कर रखते थे ।
- भवन के अन्दर सामान्यतः 3 या 4 कक्ष, रसोईघर, 1 विद्यालय स्नानागार एवं कुआं होता था ।

कच्ची एवं पक्की ईंटो का प्रयोग करते थे ।
ईंट का आकार – 1 : 2 : 4

जल निकासी हेतु पक्की ईंटों की नालियां होती थी । विश्व की किसी अन्य सभ्यता में पक्की नालियों के साक्ष्य नही मिलते थे ।

प्रमुख नगर

1. हडप्पा: –

पाकिस्तान के पंजाब के मोंटगोमरी जिले मे स्थित (अब – शाहीवाल जिले मे) रावी नदी के तट पर

- उत्खननकर्ता – दयाराम साहनी
- रावी नदी के तट पर श्रमिको के आवास एवं अन्नागार मिलते हैं ।
- R – 37 नामक कब्रिस्तान मिलता है । एक शव को ताबूत मे दफनाया गया है, इसे विदेशी की कब्र कहते है ।
- टीले पर निर्मित – व्हीलर ने "माउण्ट A – B" कहा
- शंख का बना बैल 18 वर्ताकार चबूतरे मिले है ।
- यहां से सर्वाधिक अभिलेख युक्त मुहरें मिली है ।
- 6 – 6 की पंक्ति में कुल 12 कमरों वाला आवास स्थल मिला है ।
- एक स्त्री के गर्भ से निकलता हुआ पौधा की मृणमूर्ति मिली है । सम्भवतः उर्वरता की देवी होगी ।

2. मोहनजोदडो : –

स्थिति = लरकाना (सिन्ध, PAK)
सिन्धु नदी के तट पर
उत्खननकर्ता = राखालदास बनर्जी
मोहनजोदडो का शाब्दिक अर्थ = मृतकों का टीला (सिन्धी भाषा)

(i) विशाल स्नानागार –
  (a) 11.88 × 7.01 × 2.43 मीटर
  (b) सम्भवतया यहाँ धार्मिक अनुष्ठानों का आयोजन किया जाता रहा होगा ?
  (c) सर जॉन मार्शल ने इसे तात्कालिक समय की आश्चर्यजनक इमारत कहा है ।

(ii) विशाल अन्नागार सिंधु सभ्यता की सबसे बडी इमारत है । ल. 45.71×15.23 मीटर चौडी है ।
(iii) महाविद्यालय के साक्ष्य
(iv) सूती कपडे के साक्ष्य
(V) हाथी का कपालखण्ड
(vi) कांसा की नर्तकी की मूर्ति मिली है ।
(vii) पुरोहित राजा की मूर्ति जो ध्यान की अवस्था में है
  (a) इसने शॉल ओढ रखी है जिस पर कशीदाकारी का कार्य किया गया है ।
(viii) यहाँ से मेसोपोटामिया की मुहर मिलती है ।
(ix)योगी की मूर्ति मिली है ।
(x) आद्य शिव की मूर्ति मिली है ।
(xi)बांध से पतन के साक्ष्य मिलते है ।
(xii)सर्वाधिक मुहरें सिंधु घाटी सभ्यता के यहां मिलती है ।

3. लोथल :–

स्थिति = गुजरात
- भोगवा नदी के किनारे

उत्खननकर्ता = S. R. राव (रंगनाथ राव)
→ यह एक व्यापारिक नगर था ।

(i) यहाँ से गोदीवाडा (Dockyard) मिलता है
  (a) यह सिन्धु घाटी सभ्यता की सबसे बडी कृति है ।
  (ii) मनके (Bead) बनाने का कारखाना
  (iii) चावल के साक्ष्य
(iv) फारस की मुहर जो गोलाकार बटनुमा है
  (v) घोडे की मृण्मूर्तियाँ
  (vi) चक्की के दो पाट
(vii) घरों के दरवाजे मुख्य मार्ग पर खुलते है (एकमात्र)
(viii) छोटे दिशा सूचक यंत्र

4. सुरकोटडा / सुरकोटदा: –

स्थिति = गुजरात
  (i) घोडे की हड्डियाँ
- सिन्धु घाटी सभ्यता के लोगो को घोडे का ज्ञान नहीं था ।

5. रोजदी (गुजरात)

- हाथी के साक्ष्य

6. रोपड (PB)

मनुष्य के साथ कुत्ते को दफनाने के साक्ष्य

7. धौलावीरा

गुजरात – कच्छ जिला (किसी नदी तट पर नहीं)
उत्खननकर्त्ता – रविन्द्र सिंह विष्ट (1990 में)

- यह सबसे नवीन नगर है जिसका उत्खनन किया गया
- कृत्रिम जलाशय के साक्ष्य। संभवतः नहरों के माध्यम से खेती करते होंगे। (दुर्गाभाग, मध्यम नगर, निचला)
- यह नगर 3 भागों में बंटा हुआ था।
- स्टेडियम एवं सूचना पट्ट के अवशेष मिलते है (खेल का मैदान)

8. चन्हुदड़ो

उत्खननकर्त्ता – एन. मजूमदार (डाकूओं ने हत्या कर दी) – अर्नेस्ट मैके

- मनके बनाने के कारखाने (मणिकारी), मुहर बनाने का काम आदि।
- औद्योगिक नगर
- झाकर एवं झुकर संस्कृति के साक्ष्य मिलते है।
- कुत्ते द्वारा बिल्ली का पीछा करने के पद चिन्ह है।
- एक सौन्दर्य पेटिका मिली है। जिसमें एक लिपिस्टिक है।

कालीबंगा:–

अवस्थिति– हनुमानगढ
नदी–घग्घर/सरस्वती/दृषद्धती/चौतांग
उत्खननकर्ता– अमलानन्द घोष (1952)अन्य सहयोगी– बी. बी. लाल बी. के. थापर
जे. पी. जोशी एम. डी. खरे
शाब्दिक अर्थ– काली चुडिया (पंजाबी भाषा का शब्द)
उपनाम– दीन हीन बस्ती– कच्ची ईटों के मकान।

हडप्पा लिपि

- लगभग 64 मूल चिह्न व 400 तक अक्षर
- इन्हें लिपि का ज्ञान था
- दायीं से बायीं ओर लिखते थे।
- गोमूत्राक्षर लिपि एवं भाव–चित्रात्मक लिपि थी।
- 375 से 400 तक भाव एवं शब्दों का प्रयोग करते थे।
- मछली का प्रयोग Max तथा "U" आकार भी अधिक

वैदिक सभ्यता या आर्य सभ्यता

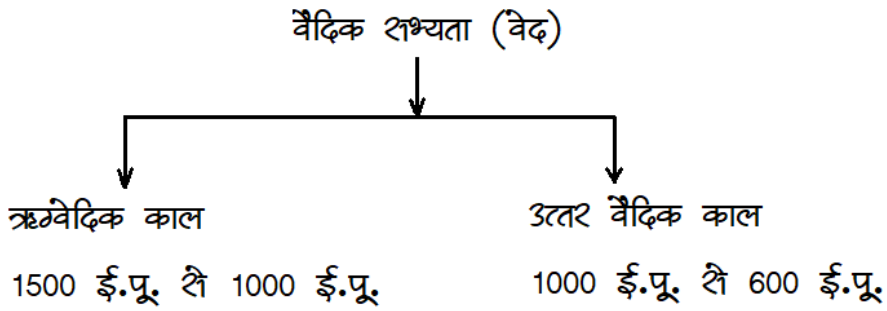

. वेद – विद् – ज्ञान/ जानना

वेद	संहिता	ब्राह्मण	आरण्यक	उपनिषद्
ऋग्वेद	एतरेय, कौषितकी	"	"	"
यजुर्वेद	शुक्ल यजु कृष्ण यजु	शतपथ तैतरिया	बृहदारण्यक तैतरीय	बृहदारण्येक ईशोपनिषद कठोपनिषद श्वेताश्वेतर मैत्रेरेय तैत्रेरेय
सामवेद	साम संहिता	पंचविश षडविश, जेमिनीय, अद्भूत	छान्दोग्य जैमिनीय	छान्दोग्य जैमिनीय कैन
अथर्ववेद	अथर्व संहिता	गोपथ		माण्डूक्य मुण्डक, प्रश्नों उपनिषद्

वेद शब्द – विद् धातु से बना है जिसका शाब्दिक अर्थ है ज्ञान या जानना।

– ये विश्व की प्राचीनतम रचनाओं में एक है।

– वेद चार प्रकार के है।

– प्रत्येक वेद के चार भाग होते है–

1. संहिता – मंत्रों का सकल संहिंता कहलाता है।

2. ब्राह्मण – मंत्रों की गद्यात्मक व्याख्याएँ ब्राह्मण कहलाती है।
3. आरण्यक – यह आरण्य शब्द से बना है। जिसका शाब्दिक अर्थ है वन और भावार्थ है 'एकान्त' अर्थात वे ग्रंथ जिनका अध्ययन व अध्यापन एकांत में किया जाता है आरण्यक कहलाते है।
   – इनमें यज्ञों की रहस्यात्मक व्याख्याएँ मिलती है।
4. उपनिषद – वे ग्रंथ जिनमें आत्मा, परमात्मा जैसी आध्यात्मिक चर्चाएँ हुई है उपनिषद् कहलाते है।

1. ऋग्वेद – यह सबसे प्राचीन और वृहत्त (बडी) संहिता है। इसमें देवताओं की उपासना करने के लिए प्रशंसात्मक मंत्रों का संकलन है।

ऋत्विज – यज्ञों का पुरोहित

– इससे संबंधित ऋत्विज या पुरोहित होता जो यज्ञ से संबंधित देवता का आहवान करता है।

– ऋग्वेद में प्रारम्भ में 10 मण्डल 1017 सूक्त 10462 मंत्र थे।

– कालांतर में पांडुलिपियों के रूप में 11 सूक्त और मिले जिंहे ऋग्वेद के 8वें मण्डल जोडा गया। इन अतिरिक्त सूक्तों को ही बालाखिल्य सूक्त कहा जाता है।

– अतः वर्तमान में ऋग्वेद के 10 मण्डल व 1028 सूक्त 10598 मंत्र है।

– कुल शब्द 1,53,572 है।

– ऋग्वेद के सभी मण्डल किसी न किसी ऋषि को समर्पित है।

1. अंगीरा ऋषि (देवी सूक्त–गायत्री मंत्र)
2. भार्गव
3. विश्वामित्र
4. वामदेव
5. अत्रि
6. भारद्वाज
7. वशिष्ठ
8. कण्व (11 सूक्त के साथ जोडे गए)
9. सोम
10. दूसरे से सातवें मण्डलों को वंश मण्डल कहा जाता है।

पहला व 10 मण्डल नवीनतम मण्डल है।

2. यजुर्वेद – यज्ञ विधि से संबंधित मंत्रों का संकलन यजु संहिता या यजुर्वेद कहलाता है।

ऋत्विज – इससे संबंधित ऋत्विज 'अध्वर्यु8 कहलाता है जो यज्ञ विधि का सम्पादन करता है अध्वर्यु कहलाता है।

यजुर्वेद के दो भाग है – 1. शुक्ल यजुर्वेद 2. कृष्ण यजुर्वेद

1. शुक्ल यजुर्वेद – शुक्ल यजुर्वेद की रचना वाजसनेय के पुत्र 'याज्ञवल्क्य' ने की थी इसलिए इस संहिता को वाजसनेय संहिता भी कहा जाता है।
2. कृष्ण यजुर्वेद – चम्पू शैली में है (गद्य व पद्य)

3. सामवेद – यज्ञ के समय गाए जाने वाले मंत्र का संकलन साम संहिता या सामवेद कहलाता है।

– इससे संबंधित ऋत्विज उद्गाता कहलाता है।

– सामवेद में मूल मंत्र 75 है।

– ऋग्वेद से 1474 मंत्र लिए गए है।

– 261 मंत्र पुनरावृति हुए है। अतः कुल मंत्र 1810 है।

4. अथर्ववेद – लौकिक विषयों से संबंधित मंत्रों का संकलन जैसे– कृषि, सिंचाई, चिकित्सा, औषधियां, राजनिति, तंत्र और जादू–टोना आदि।

– इससे संबंधित ऋत्विज ब्रह्मा कहलाता है।

– जो समस्त यज्ञ क्रिया का निरिक्षण करता है। वह ब्रह्मा है।

– यह चारों वेदों का ज्ञाता माना गया है इसलिए इसे सबसे महत्तवपूर्ण ऋत्विज माना गया है।

	वेद	उपवेद
1	ऋग्वेद	आयुर्वेद
2	यजुर्वेद	धनुर्वेद
3	सामवेद	गंदर्ववेद
4	अथर्ववेद	शिल्पवेद

आर्यो का मूल स्थान–

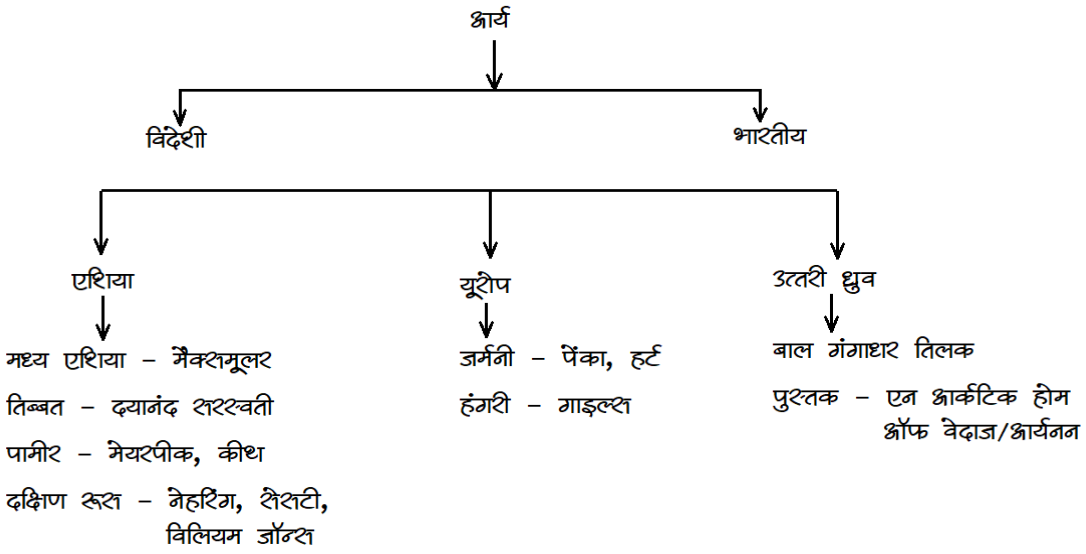

भारतीय –

1. सप्त सैंधर्व (उत्तर पश्चिमी भारत) – अविनाश, सम्पूर्णानंद
2. सरस्वती – दृष्टती (ब्रह्मर्षि प्रदेश) – पं. गंगानाथ झा
3. देविका प्रदेश, मुल्तान (पंजाब, पाकिस्तान में) – त्रिदेव
4. मध्य प्रदेश – डा. राजबलि पांडेय

– उपर्युक्त सभी मतों में से मैक्समूलर का मत अधिकांश विद्वान स्वीकार करते हैं।

– मैक्समूलर के अनुसार आर्य मध्य एशिया की एक यायावर (घुम्मकड) जाति थी।

– मुख्य व्यवसाय पशु पालन थां

– बोगोजगोई अभिलेख – आर्य कालीन एक मात्र अभिलेख है जो मध्य एशिया में बोगोजगोई नामक स्थान पर प्राप्त हुआ है।

– यह 1400 ई.पू. का अभिलेख है। जिसमें हिताई और मित्ताई शासकों के द्वारा की गई संधि का विवरण है।

– जिसमें ऋग्वेदिक कालीन चार देवताओं का उल्लेख मिलता है – इंद्र, वरूण, मित्र, नासत्य।

1. ऋग्वेदिक काल –
    1. ऋग्वेदिक कालीन भौगोलिक स्थिति – ऋग्वेद में अफगानिस्तान की चार नदियाँ के नाम –

क्र.स.	वर्तमान	ऋग्वेदिक काल

1	काबुल	कुंभा
2	स्वात	सुवास्तु
3	कुर्रम	क्रुमु
4	गोमल	गोमती

2. सप्त सैन्धव प्रदेश- सिंध+पंजाब+राजस्थान इसके अंतर्गत यह क्षेत्र आते थे।

क्र.स.	नदियाँ	ऋग्वेदी काल का नाम
1	सिंधु	सिंधु
2	सरस्वती	सरस्वती
3	झेलम	वितस्ता
4	चिनाब	अस्किनी
5	रावी	परूष्णी
6	सतलज	शुतुद्री
7	व्यास	विपास

- ऋग्वेद में यमुना का तीन बार व गंगा का 1 बार उल्लेख हुआ है।
- अर्थात गंगा व यमुना नदियों का ऋग्वेदी काल में विशेष महत्व नहीं था।
- ऋग्वेद के 10 मण्डल में नदी सूक्त है।
- जिसमें 25 नदियों की स्तुति की गई है।
- ऋग्वेद में 3 पर्वतों का नामोल्लेख हुआ है।
  1. आर्चिक
  2. मूंजवंत - दोनों हिमालय की पर्वत माला है।
  3. शीलवंत - सुलेमान पर्वत (पाकिस्तान) वर्तमान में मूंजवंत पर्वत शोभरस के लिए प्रसिद्ध था।
- ऋग्वेदिक कालीन आर्यो की राजनीतिक स्थिति-
  1. प्रशासनिक वर्गीकरण -
     1. कुल - कुलप
     2. ग्राम - ग्रामणी
     3. विश - विशपति

4. जन – राजा/जनस्य
गोप्ता/ रक्षाक
निर्वाचित
आनुवंशिक

- ऋग्वेदिक काल के प्रारंभ में राजा का पद निर्वाचित होता था किंतु इस काल के अंतिम चरण में राजा का पद आनुवंशिक हो गया।
- राजा किसी निश्चित भू-भाग का स्वामी नहीं होता है बल्कि अपने कबिले का सरदार होता था। जिसका अर्थ/कार्य अपने जन के पशु-धन और मनुष्य की रक्षा करना था। वह युद्ध में अपने जन का नेतृत्व करता था।
- ऋग्वेद में दो ही प्रशासनिक अधिकारियों के नाम का उल्लेख हुआ–
  1. पुरोहित – यज्ञ 2. सेनानी – सेनापति
- रक्षा करने की एवज में जन के लोग अपने राजा को स्वेच्छा से गोधन, अनाज देते थे। जिसे बलि कहा जाता था।
- कोई निश्चित सेना नहीं था। किंतु व्रात, गार्ध, गण शब्दों का प्रयोग सैन्य टुकडियों के लिए किए जाते थे।
- दशस्थ (राजा) युद्ध – 7वें मण्डल में, परूष्णी (रावी) नदी भरत जन बनाम 10 जन सुदास बनाम 5 आर्य व 5 अनार्य
  5 आर्य जन – 1. अनु 2. यदु 3. पुरू 4. द्रहू 5. तुर्वस
  5 अनार्य जन – 1. अलना 2. भलनास 3. पक्था 4. शिवी 5. विशाणिन
  दशस्थ युद्ध (10 राजाओं) – इस युद्ध का उल्लेख ऋग्वेद के 7वें मण्डल (विशिष्ट) में है। यह युद्ध परूष्णी (रावी) नदी के तट पर हुआ था।
  - यह युद्ध भरत जन के शासक सुदास और 10 राजाओं के संघ के मध्य हुआ था। जिसमें 5 आर्य व 5 अनार्य थे।
  - इस युद्ध में भरत जन की विजय हुई थी।
  - विशिष्ट भरत जन के पुरोहित थे और विश्वामित्र 10 राजाओं के पुरोहित थे।
- तीन प्रकार की राजनीतिक संस्थाए –
  1. विदथ – इस 122 बार उल्लेख– सबसे प्राचीन संस्था – न्याय (बटवारा) – न्याय इसका मुख्य कार्य था।
     - न्याय अर्थात् लूट के माल का बटवारा करना था।
  2. सभा – इसका 8 बार उल्लेख हुआ है। इसका कार्य था राजा को सलाह देना था। इसे उच्च सदन भी कहते है।
  3. समिति – इसका 9 बार उल्लेख हुआ है। इस निम्न चदन भी कहते थे। आमजन का कार्य राजा का चयन करना था।

सामाजिक स्थिति –

1. परिवार – संयुक्त परिवार और पितृसत्तात्मक परिवार संयुक्त और पितृसत्तात्मक दोनों थे। परिवार का मुख्या कुलप कहलाता था। वह निरंकुश होता था और कभी कठोर (निष्ठूर) भी हो जाता था। जैसे– ऋग्वेद के पहले मण्डल में पिता के द्वारा अपने पुत्र को अंधा करवाने व बेचने का भी उल्लेख हुआ है।
2. वर्गीकरण –
    1. ब्राह्मण– मुख
    2. क्षत्रिय– भुजा
    3. वैश्य– जंघा
    4. शुद्र– चरण

- 10वां मण्डल – पुरूष सुक्त
  ऋग्वेदिक कालीन समाज 4 वर्गों में विभाजित था–
  1. ब्राह्मण 2. क्षत्रिय 3. वैश्य 4. शुद्र
- 4 वर्ग का उल्लेख सर्वप्रथम के 10वें मण्डल के पुरूष सुक्त में हुआ है। जहां चारों वर्णों की उत्पत्ति परम पुरूष के चार अलग–अलग वर्णो (अंगों) से बनाई गई है।
- महिलाये दो अधिकारों से वंचित थी –
  1. सम्पत्ति का अधिकार
  2. राजनीतिक का अधिकार
- आर्यो के अतिरिक्त तत्कालीन समाज में भारत की मूल जातियां भी थी जिंहे आर्यो ने अनार्य कहा है।
- प्रारंभ में आर्यों और अनार्यो के बीच में संघर्ष प्रवृत्ति दिखायी देती है क्योंकि ऋग्वेद में अनार्यों के लिए अनेक नकारात्मक शब्दों का प्रयोग हुआ है।
  अनास – चपटी नाक वाले
  अदेवयु – देवताओं को न मानने वाले
  अयाज्ञवन् – यज्ञ न करने वाले
  मृगधवाक – अटपटी वाणी बोलने वाले

खान–पान –

आर्य मांसाहारी व शाकहारी दोनों थे भोजन में दुग्ध उत्पादक का प्रयोग करते थे।

यव (जौ) उनका मुख्य खाद्यान्न था। क्षीरपाकोदन (खीर), अपूषघृतवृतं (माल पुए) ऋग्वेद में उल्लेखित पकवानों के नाम है। मिठास के लिए शहद का प्रयोग करते थे।

– पेय पदार्थो में सुरा और सोमरस महत्तवपूर्ण थे। सुरा सामान्य मदिरा थी जिसकी ऋग्वेद में निंदा की गयी है। सोमरस देव प्रिय पेय पदार्थ था।

- ऋग्वेदिक कालीन आर्य सूती ऊनी और मृग छाल से बने वस्त्र धारण करते थे। यद्यपि ऋग्वेद में कपास का उल्लेख नहीं हुआ है तथापि उन्हें सूत से कपडे बुनने का ज्ञान था संभवत् कपास का उत्पादन अनार्य लोग करते थे।
- कमर से ऊपर पहना जाने वाला वस्त्र – वास
- कमर से नीचे पहना जाने वाला वस्त्र – नीवि
- ओढने वाला वस्त्र – अधिवास
- स्त्री व पुरूष दोनों ही पगढी धारण करते थे जिसे उष्णीय कहते हैं।

ऋग्वेदिक कालीन समाज में स्त्रीयों की दशाः-

- ऋग्वैदिक काल में स्त्रीयों को सम्मान जनक पद प्राप्त था।
- स्त्री को जायेदस्तम – स्त्री ही घर है कहा जाता था उसे गृहस्वामिनी माना जाता था।
- उपनयन संस्कार – शिक्षा का अधिकार प्राप्त था।
- ऋग्वेद में 20 ऐसी विदृषियों का उल्लेख हुआ जिन्होनें ऋग्वेद के मंत्रों की रचना की थी।

शचि लोपामुद्रा (अगस्त मुनि की पत्नि)

घोषा

अपाला

विश्वास

विश्चुला

- समाज में बाल विवाह व पर्दा प्रथा जैसी कुरूतियां नहीं थी।
- विवाह दो प्रकार के थे –
  1. सवर्ण – सजातीय
  2. विवर्ण – विजातीय-ये भी दो प्रकार का था। 1. अनुलोग 2. प्रतिलोम

1. अनुलोम : उच्च वर्ग का लडका व निम्न वर्ण की लडकी
2. प्रतिलोम : 3 निम्न वर्ण का लडका और उच्च वर्ण की लडकी

- अनेक जीवन भर अविवाहित रहने वाली महिलाओं का भी उल्लेख मिलता है ऐसी महिला अभज्रु कहलाती थी।
- बहूपति प्रथा भी प्रचलित थी विवाह के समय कन्या का पिता वर पक्ष को उपहार स्वरूप जो वस्तुएं देता था विहतु कहलाती थी।
- विधवा विवाह नहीं होते थे किंतु नियोग प्रथा प्रचलित थी जिसमें निःसंतान विधवा पुत्र प्राप्ति के उद्देश्य से समाज की अनुमति से परिवार के किसी सदस्य के साथ संबंध स्थापित करती थी यह अस्थायी विवाह ही नियोग कहलाता था।
- चावल, कपास, नमक – ऋग्वेद में

आर्थिक स्थिति –

1. पशु पालन – यह ऋग्वेदिक आर्यों का मुख्य व्यवसाय था। अश्व आर्यो का प्रिय पशु था। जिसका उल्लेख ऋग्वेद में 215 बार हुआ है। अश्व युद्ध की दृष्टि से महत्वपूर्ण था।
    - ऋग्वेद में गाय का उल्लेख 176 बार हुआ है। भोजन से जुडे होने के कारण गाय आर्यो का मुख्य पशु थी।
    - बैल का उल्लेख 117 बार हुआ है जिसका उपयोग यातायात व माल ढोने के लिए किया जाता था।
    - ऋग्वेद में एक स्थान पर अतिथि के लिए गोहंता शब्द का प्रयोग किया गया है।
    - मार्क्सवादी इतिहासकारों के अनुसार संभवत् आर्य विशेष अवसरों पर गाय का मांस खाते थे। किंतु राष्ट्रवादी इतिहासकार इस मत से सहमत नहीं है।
      उनके अनुसार ऋग्वेद में गौहंता शब्द किसी व्यक्ति विशेष के लिए प्रयोग हुआ है।
2. कृषि – कृषि आर्यो का सहायक व्यवसाय था। सम्पूर्ण ऋग्वेद में कृषि का उल्लेख मात्र 24 बार हुआ है।
    - ऋग्वेद के 4वें मण्डल में कृषि संबंधि क्रियाओं का उल्लेख हुआ है।
    - संभवत् आर्य स्थानांतरित कृषि करते थे।
    - ऋग्वेद में हल के लिए लांगल/सीर शब्द का प्रयोग हुआ है।
    - कुओं के लिए अवट शब्द का प्रयोग हुआ है।
    - नहर के लिए कूल्या शब्द का प्रयोग हुआ है।
    - मुख्य उपज यव जौ थे।
3. व्यापारिक वाणिज्य – ऋग्वेद में व्यापार करने वाले लोगों के लिए पणि शब्द का प्रयोग हुआ जो संभवत् अनार्य थे।

. अनेक स्थानों पर गाय चुराने वालों के लिए पणि शब्द का प्रयोग हुआ है।

. उधार लेन–देन के व्यापार कुसीदवृत्ति कहा जाता था जबकि ब्याज लेने वालो को बेगनाट कहा जाता था।
  ऋग्वेद में इन दोनों को घृणा की दृष्टि से देखा जाता था। व्यापार वस्तु, विनिमय आधारित था। लेन–देन के लिए गाय, निष्क (सोने का हार) का प्रयोग किया जाता था।

. ऋग्वेद में अनेक शिल्प और उद्योगों का उल्लेख मिलता है किंतु तक्षाण कला (बडई) शिल्प का सर्वाधिक महत्तव था।

उत्तरवैदिक कालीन धार्मिक स्थिति–

. ऋग्वैदिक कालीन धर्म प्रकृतिवादी धर्म था जिसमें अनेक प्राकृतिक शक्तियों का मानवीकरण करके उन्हें देवता रूप मान लिया।

- प्रारम्भ में वे बहुदेववाद में विश्वास करते थे किंतु ऋग्वेद के दसवें मण्डल में पुरूष सुक्त में एकेश्वरवाद का भी उल्लेख मिलता है।
- ऋग्वेद में सबसे अधिक सूक्त इंद्र को समर्पित है जिसका कुल 250 बार उल्लेख हुआ है यह वर्षा और युद्ध देवता था।
- ऋग्वेद में अग्नि दूसरा महत्तवपूर्ण देवता था जिसका 200 बार उल्लेख हुआ है यह मध्यस्थ देवता था।
- वरूण का उल्लेख 30 बार हुआ है जो जल और ऋतु का स्वामी माना जाता है
- जगत की व्यवस्था को ही ऋतु कहा जाता था।
- इस प्रकार ऋग्वेद में कुल 33 देवताओं का उल्लेख मिलता है–
  1. पृथ्वी स्थानीय 11 संख्या थी
  2. अन्तरिक्ष स्थानीय 11
  3. आकाश स्थानीय 11
- पूषण :– पशुओं का देवता था बाद में यह शुद्रों का देवता हो गया।
- ऋग्वैदिक काल में यज्ञ छोटे एवं सरल होते है।

उत्तर वैदिक काल (1000ई.पू. 600ई.पू.)

1. भौगोलिक विस्तारः-
   उत्तरवैदिक काल में आर्यों का विस्तार गंगा यमुना के मैदानी क्षेत्र में होने लगा आर्यो ने लोहे की कुल्हाडी का प्रयोग करते हुए जंगल काटे
- शतपथ ब्राह्मण में विदेह माधव की कथा से यज्ञ ज्ञात होता है कि आर्यो ने जंगलों को जलाकर अपना भौगोलिक विस्तार किया था इस कथा के अनुसार आर्यो की भौगोलिक सीमा सदानीरा या गंडक नदी बन गयी।

उत्तरवैदिक काल के आर्थिक परिवर्तनः-

कृषि मुख्य व्यवसाय व पशुपालन सहायक व्यवसाय बन गया।

काठल संहिता मं 24 बैलों द्वारा हल खेंचे जाने का उल्लेख मिलता है।

- शतपथ ब्राह्मण में कृषि संबंधि चारों क्रियाओं की जानकारी मिलती है-
  1. जुताई - कर्षण
  2. बुआई - वपन
  3. कटाई - लुनन
  4. मढाई - मर्षण
- शतपथ ब्राह्मण में ही अनेक धान्य की सुची मिलती है-
  चावल - ब्रीहि/तंडुल
  गेंहू - गोधूम
  उडद - माण
  मूंग - मुद्गं
- अथर्ववेद में पृथवेन्यु नामक व्यक्ति को कृषि का प्रथम अनुसंधान करता माना गया है।
- कृषि के साथ-साथ पशुपालन का भी विकास हुआ बैल का आर्थिक महत्तव बढने लगा और गाय धार्मिक पशु बन गयी।
- कृषि के विस्तार के कारण उद्योग-धन्धों और व्यापार-वाणिज्य का भी विकास हुआ। व्यापारियों ने अपने संगठन बनाने प्रारंभ कर दिये ।इन संगठनों को श्रेणी कहा गया।
- श्रेणी का प्रमुख श्रेष्ठी (सेठजी) कहलाता था।
- निष्क, शतमान, कृष्णल, पाद उत्तर वैदिक कालीन माप-तौल की इकाईयां थी।
- तौल की दो छोटी इकाईयों का उल्लेख हुआ है जिंहे रक्तिका व गुंजा कहा गया

उत्तरवैदिक काल में राजनैतिक परिवर्तन

राजनीतिक परिवर्तन –

उत्तर वैदिक काल में आर्यों के जीवन में स्थायित्व आ गया।

- आर्यो ने कृषि को मुख्य व्यवसाय बना लिया जिससे भूमि का महत्तव बडा।
- जनों के राजाओं ने युद्ध के माध्यम से अधिक–अधिक भूमि अधिकृत करना प्रारंभ कर दिया।
- शक्तिशाली जनों ने कमजोर जनों पर अधिकार कर लिया जिससे एक नई प्रशासनिक इकाई का जन्म हुआ जिसे जनपद कहा गया।
- अर्थात् उत्तर वैदिक काल में जनपदों के रूप में क्षत्रिय राज्यों का उदय हुआ।
- राजा अब निश्चित भू–क्षेत्र का स्वामी बन गया।
- राजतंत्रात्मक शासन व्यवस्था की स्पष्ट शुरूआत हो गई।
- ऐतरेय ब्राह्मण में राजा के राज्याभिषेक और दैवीय सिद्धांत का उल्लेख हुआ है अर्थात् राजा को देव माना गया है।
- ऋग्वैदिक प्राचीन संस्थाओं में विदद समाप्त हो गई जबकि सभा और समिति को प्रजापति (राजा) की दो पुत्रियाँ कही गई है।
- सभा को नरिष्ठा कहा गया है अर्थात् अनुउल्लंघनीय कहा गया है।
- समिति का सभापति ईशान कहलाता था।
- राजा का दायित्व का निर्वाह करने के लिए एक नई संस्था का जन्म हुआ जिसे शतपथ ब्राह्मण में रत्निन और पंचविश ब्राह्मण में उन्हें वीर कहा गया।
  – राजा संहिता इनकी संख्या 12 थी–
  1. राजा 2. युवराज 3. पुरोहित 4. सेनानी 5. भागदुध–अर्थ मंत्री
  6. संग्रहिता–कोषाध्यक्ष 7. अक्षावाप–द्युत विभाग 8. पालागल – मित्र
  9. सूत–रथ 10. क्षाता–महल विभाग 11. ग्रामणी 12. व्रजपति – चरागाह
- सामाजिक परिवर्तन – उत्तरवैदिक काल में वर्ण व्यवस्था जटिल हो गई। वर्ण का विभाजन व्यवसाय के स्थान पर जन्म आधारित हो गया। ब्राह्मण, क्षत्रिय व वैश्य उच्च वर्ण हो गए। शुद्रो से उपनयन (शिक्षा) संस्कार का अधिकार दिन लिया।
- उत्तरवैदिक का लगें गोत्र परम्परा का प्रारम्भ हो गया। सर्वप्रथम गौत्र शब्द का उल्लेख ऋग्वेद में हुआ था किंतु एक परम्परा के रूप में यह सर्वप्रथम अथर्ववेद में हुआ है।
- उत्तरवैदिक काल में शुद्रों की स्थिति में गिरावट आयी उनसे शिक्षा प्राप्ति का अधिकार छिन लिया।
- शुद्र वर्ण में व्यवसाय के आधार पर जातियों की स्थापना हो गई।